नागरिक शास्त्र शिक्षण में पाठ्यपुस्तक का महत्व
(Importance of text book in Civics teaching)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

क्रॉनबेक (Cronbach) ने लिखा है, "अमेरिका में आज के शैक्षिक चित्र का केन्द्र-बिन्दु पाठ्य-पुस्तक है। इसका विद्यालय में महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसका अतीत में भी महत्त्व अधिक था और आज भी शक्तिशाली महत्त्व है। इसको जनसाधारण की भी लोकप्रियता प्राप्त होती है क्योंकि पाठ्य-पुस्तक विद्यालय या कक्षा में छात्र तथा शिक्षक के लिए विशेष रूप से तैयार की जाती है जो कि किसी एकाकी विषय या सम्बन्धित विषयों के कोर्स का प्रस्तुतीकरण करती है।" बेकन (Bacon) ने पाठ्य-पुस्तक को परिभाषित करते हुए लिखा है, "पाठ्य-पुस्तक कक्षा प्रयोग के लिए विशेषज्ञों द्वारा सावधानी के साथ तैयार की जाती है। यह शिक्षण युक्तियों से भी सुसज्जित होती है।" हॉलक्वेस्ट (Hallquest) का कहना है, "पाठ्य-पुस्तक शिक्षण-अभिप्रायों के लिए व्यवस्थित प्रजातीय चिन्तन का एक अभिलेख है।" लेंग (Lange) ने पाठ्य-पुस्तक को परिभाषित करते हुए लिखा है, "यह अध्ययन क्षेत्र की किसी शाखा की एक प्रमाणित पुस्तक होती है।" वस्तुतः पाठ्य-पुस्तक एक अधिगम साधन (Learning instrument) है जिसका प्रयोग विद्यालयों तथा कॉलेजों में शिक्षण कार्यक्रम को परिपूरित करने के लिए किया जाता है। पाठ्य-पुस्तक मुद्रित, सजिल्द होती है जो कि शिक्षण-उद्देश्यों या अभिप्रायों की पूर्ति करती है। साथ ही यह सीखने वाले के हाथ में दी जाती है।

विभिन्न प्रकार की कलाओं तथा ज्ञान-राशि को अर्जित करने के लिए पुस्तक बहुत उपयोगी होती है। परन्तु आधुनिक काल में पाठ्य-पुस्तकों का महत्त्व शिक्षा के उपकरण के रूप में और अधिक बढ़ गया है। शिक्षक अपनी पाठ-योजनाओं का निर्माण पाठ्य-पुस्तकों की सहायता से करता है और छात्र विभिन्न विचारों एवं अन्वेषकों के अनुभवों को तर्कबद्ध रूप में ग्रहण कर लेता है। इस प्रकार पाठ्य-पुस्तकें शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक एवं छात्र दोनों का पथ-प्रदर्शन करती हैं। इसके अतिरिक्त पाठ्य-पुस्तकें समय की बचत करती हैं तथा पूर्वानुभवों को प्रदान करके दैनिक जीवन के प्रयासों में व्यर्थ की आवृत्ति को रोकती हैं। इन पूर्वानुभवों की पृष्ठभूमि पर छात्र एवं शिक्षक दोनों ही

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

अपने जीवन-प्रासाद को भव्य एवं सुदृढ़ बनाने में समर्थ हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त पाठ्य-पुस्तकें इस बात को सुनिश्चित रूप से बताती हैं कि बालकों को किसी स्तर-विशेष पर कितनी पाठ्य-वस्तु अर्जित करनी है ? इस प्रकार पाठ्य-पुस्तकें सुनिश्चितता प्रदान करती हैं। इनके द्वारा छात्र तथा शिक्षक—दोनों को नवीन अनुभवों तथा सूचनाओं के संकलन में सुविधा रहती है।

पाठ्य-पुस्तकों के विरुद्ध कुछ विद्वानों का कहना है कि इस साधन द्वारा छात्रों में रटने की प्रवृत्ति विकसित की जाती है। उन्हें स्वतन्त्र चिन्तन, तर्क एवं निर्णय करने हेतु अवसर प्राप्त नहीं होते हैं। इन तर्कों में सत्यता अवश्य प्रतीत होती है परन्तु ये दोष इसके दुरुपयोग के कारण उत्पन्न होते हैं। पाठ्य-पुस्तक की आवश्यकता हमें यहाँ तक कि योजना एवं इकाई पद्धतियों में भी होती है। इकाई की पूर्ण तैयारी के लिए पाठ्य-पुस्तक आवश्यक है। **हर्ल आर. डगलस** ने पाठ्य-पुस्तकों के महत्त्व को इस प्रकार स्पष्ट किया है, **''शिक्षकों के बहुमत ने अन्तिम विश्लेषण के आधार पर पाठ्य-पुस्तक को 'वे क्या और किस प्रकार पढ़ायेंगे' की आधारशिला बतलाया है।''**[1] दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि शिक्षकों द्वारा 'क्या एवं किस प्रकार पढ़ाया जाय', इन सबका आधार पाठ्य-पुस्तक ही है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

नागरिकशास्त्र की शिक्षा के लिये पाठ्य-पुस्तकें निम्न तथ्यों की दृष्टि से आवश्यक है—

(i) नागरिकशास्त्र की अच्छी पुस्तक स्व-अधिगम के लिये बहुत महत्वपूर्ण है।

(ii) पाठ्य-पुस्तकों की सहायता से शिक्षक तथा छात्रों के बीच अन्तःक्रियाएँ होनी सम्भव होती हैं। इसलिये पाठ्य-पुस्तकें अन्तःक्रिया द्वारा अधिगम प्रदान करने में सहायक होती हैं।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

(iii) पाठ्य-पुस्तकें ज्ञान के पुर्नबलन के लिये बहुत ही महत्वपूर्ण हैं।

(iv) पाठ्य-पुस्तकें पाठों तथा प्रकरणों के संवर्द्धन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं।

(v) इनके (पाठ्य-पुस्तकों के) प्रयोग से आगामी पाठों की अग्रिम तैयारी में सहायता मिलती है।

(vi) पाठ्य-पुस्तकें शिक्षकों को मार्गदर्शन प्रदान करने में सहायक होती हैं।

(vii) पाठ्य-पुस्तकें परिवीक्षित अध्ययन में भी सहायक होती हैं।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner